**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना मधुबनी**

**मो० न० 9546743796**

**Email –** [**mishrasm966@gmail.com**](mailto:mishrasm966@gmail.com)

**B. A. III**

**रसक भेद**

**आचार्य भरतमुनि द्वारा सभ मिला कए नौ प्रकारक रस मानल गेल अछि | आचार्य मम्मट सेहो भरतमुनिक समर्थक छथि | आचार्य विश्वनाथ दसम रस ‘ वात्सल्य ‘ कें निरुपित कएलनि अछि | रूप गोस्वामी एवं मधुसूदन सरस्वती एगारहम रस ‘ भक्ति ‘ क परिकल्पना कएने छथि |**

**एहि ठाम आचार्य लोकनि द्वारा निरुपित प्रमुख रसक सम्बन्धमे विचार कएल जा रहल अछि –**

**( 1 ) श्रृंगार रस : -**

**सामाजिकक हृदयमे संस्कार रूपसँ स्थित ‘ रति ‘ स्थायी भाव जखन विभाव , अनुभाव एवं संचारी भाव सभसँ अभिव्यक्त भए आस्वादक विषय बनि जाइत अछि तथा ओहिसँ जे आनंद प्राप्त होइछ , से श्रृंगार रस कहबैत अछि |**

**‘ श्रृंगार ‘ दुइ शब्दक योगसँ बनल अछि – श्रृंग एवं आर | श्रृंगक अर्थ होइछ कामोद्रेक एवं आरक अर्थ होइछ गति अथवा प्राप्ति | अतः श्रृंगार शब्दक अर्थ भेल कामोद्रेकक वृद्धि वा प्राप्ति | आचार्य विश्वनाथ श्रृंगारक परिभाषा दैत कहने छथि –**

**“ श्रृंगं हि मन्मथोद्भेदस्तदागमन हेतुक: |**

**पुरुषप्रमदाभूमि: श्रृंगार: इति गीयते || “**

**नायक एवं नायिकाक मिलनक आधार पर श्रृंगार रस दुइ प्रकारक होइछ – संयोग एवं विप्रलम्भ |**

**( अ ) संयोग श्रृंगार : - नायक – नायिकाक परस्पर अनुकूल दर्शन , प्रेमालाप , स्पर्श एवं आलिंगनादिक अनुभूयमान सुखक स्थिति संयोग श्रृंगार अछि |**

1. **स्थायीभाव - रति |**
2. **विभाव – ( क ) आलम्बन – नायक – नायिका |**

**( ख ) उद्दीपन – संगीत , मलयानिल , वसंत , कोकिल , चन्द्रमा , चन्द्रिका , वन – उपवन , एकान्त स्थान |**

1. **अनुभाव - प्रेमपूर्ण आलाप , स्नेह – स्निग्ध अवलोकन , आलिंगन , चुम्बन आदि |**
2. **संचारी भाव – श्रम , मोह , मद , धृति , गर्व आदि |**
3. **सहचर रस – हास्य , अद्भुत |**
4. **विरोधी रस – करुण , वीर , रौद्र , भयानक , वीभत्स , शान्त एवं वात्सल्य |**
5. **गुण - माधुर्य एवं प्रसाद |**
6. **वृत्ति - उपनागरिका एवं कोमला |**
7. **रीति - वैदर्भी एवं पान्चाली |**

**( ब ) विप्रलम्भ श्रृंगार : -**

**नायक – नायिका मे उत्कट अनुराग रहितहुँ समागम नहि होएबाक स्थिति विप्रलम्भ श्रृंगार कहबैत अछि | आचार्य विश्वनाथक शब्दमे –**

**“ यत्र तु रति: प्रकृष्टा नाभीष्टमुपैति विप्रमभ्भौसौ || “**

1. **स्थायीभाव - रति |**
2. **विभाव – ( क ) आलंबन – नायक – नायिका |**

**( ख ) उद्दीपन – ऋतु – सौन्दर्य , चन्द्रमा , चन्द्रिका , वन – उपवन , मलयानिल,**

**Iii अनुभाव – प्रेमास्पादि |**

**Iv संचारी – उग्रता , मरण , आलस्य , चिंता , विषाद , स्वप्न , उन्माद , व्याधि , दैन्य , शंकादि |**

**v गुण – माधुर्य , प्रासाद |**

**vi वृत्ति – उपनागरिका , कोमला |**

**vii रीति – वैदर्भी , पान्चाली | ( क्रमश )**